जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

दिनांक: 14 अप्रैल, 2025

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया मिल्लिया इस्लामिया में अंबेडकर जयंती 2025 के अवसर पर असम के माननीय राज्यपाल, श्री आचार्य ने कहा "डॉ बी आर अंबेडकर ने गहन अंधेरे में रोशनी फैलाई"

जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने भारतरत्न डॉ बीआर अंबेडकर को श्रद्धांजलि देने में राष्ट्र के साथ कदम से कदम मिलाते हुए दिनांक 13 अप्रैल, 2025 को एफटीके सूचना प्रौद्योगिकी केंद्र सभागार में एक भव्य समारोह में अम्बेडकर जी की 135 वीं जयंती के अवसर पर दूरदर्शी नेता की विरासत को याद करने और फिर से देखने के लिए कार्यक्रमों की श्रृंखला की शुरुआत की। असम के माननीय राज्यपाल, श्री लक्ष्मण प्रसाद आचार्य यादगार समारोह में मुख्य अतिथि थे जिसका थीम था- "बाबा साहेब डॉ बी आर अम्बेडकर का राष्ट्र निर्माण में योगदान " और इस अवसर पर राज भवन सचिवालय -असम सरकार के सलाहकार प्रो हरबंश दीक्षित भी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में समाज विज्ञान विद्यापीठ, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर विवेक कुमार जी ने बीज वक्तव्य दिया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कुलपति प्रोफेसर मजहर आसिफ ने की और जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कुलसचिव प्रोफेसर में मोहम्मद महताब आलम रिज़वी भी उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय की टीम द्वारा ऑडिटोरियम में जामिया तराना के बाद राष्ट्रगान हुआ ऑडिटोरियम और तदुपरांत संविधान शिल्पी डॉ बी आर अंबेडकर को पुष्पांजलि दी गई ।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कुलपति ने माननीय राज्यपाल श्री आचार्य जी का स्वागत किया, जिसमें स्मृति चिन्ह और शॉल से उन्हें सम्मानित किया गया, इसके बाद जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कुलसचिव द्वारा प्रोफेसर दीक्षित का सम्मान, प्रोफेसर विवेक कुमार का सम्मान प्रोफेसर रेविंस और डॉ अमित कुमार वर्मा द्वारा, जेएमआई के कुलपति का सम्मान डॉ कपिल और डॉ अरुणेश द्वारा, जेएमआई के कुल सचिव का सम्मान प्रोफेसर राजन पटेल द्वारा किया गया।

प्रो मजहर आसिफ, कुलपति, जेएमआई, ने अपने स्वागत संबोधन में सहजता से भोजपुरी और असमिया भाषाओं को सहज रूप से शामिल करते हुए यह कहा कि वह जामिया मिल्लिया इस्लामिया में असम के महामहिम राज्यपाल के आगमन से बहुत सम्मानित महसूस कर रहे हैं क्योंकि भारतीय परंपराओं और मूल्यों के समग्र संस्कृति का यह विश्वविद्यालय एक उत्कृष्ट उदाहरण है। जामिया मिल्लिया इस्लामिया के 100 से अधिक वर्षों के समृद्ध इतिहास का हवाला देते हुए जो भारत के स्वतंत्रता-पूर्व तक जाता है प्रोफेसर आसिफ ने कहा, "जामिया मिल्लिया इस्लामिया केवल एक विश्वविद्यालय नहीं है, बल्कि एक विचार प्रक्रिया और एक मिशन है, जिसकी नैतिक समृद्धि और मूलभूत मूल्य महात्मा गांधी, रबिन्द्रनाथ टैगोर और अली भाइयों के बीच तक जाते हैं ।इस ऐतिहासिक संस्था के शानदार राष्ट्रवादी संस्थापक, यह सभी के लिए भाईचारे और सम्मान के उच्च सांस्कृतिक मूल्यों का निवास स्थान बनाता है। उन्होंने यह कहा कि "यह तहजीब, संस्कृत और संस्कृति है जो जेएमआई की भावना में संलग्न है, जो हमारे छात्रों को एक परिवर्तनकारी यात्रा का मार्ग प्रशस्त करती है, जो उन्हें एक आदमी से एक इंसान बनाता है"।

दर्शकों को याद दिलाते हुए माननीय कुलपति ने कहा कि डॉ अंबेडकर आज पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हैं क्योंकि कई मौलिक स्वतंत्रता अर्थात् आज हम अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का आनंद लेते हैं, किसी भी धर्म को मानने की स्वतंत्रता, स्वतंत्र रूप से आगे बढ़ने और किसी भी वस्त्र को पहनने की

स्वतंत्रता आदि अम्बेडकर की देन हैं । यह उल्लेखनीय है कि जेएमआई के लगभग 40% छात्र भौगोलिक, भाषाई, सामाजिक और आर्थिक रूप से हाशिए पर रहने वाले वर्गों से आते हैं और यह विश्वविद्यालय को न केवल अपने जीवन और समुदायों को सशक्त बनाने में एक अहम भूमिका निभाने की अनुमति देता है, बल्कि यह राष्ट्र निर्माण में योगदान भी देता है ।

प्रोफेसर ने घोषणा की कि यह आयोजन मात्र शुरुआत है और जामिया मिल्लिया इस्लामिया प्रति वर्ष बाबा साहेब की सालगिरह का जश्न अधिक उत्साह और जोर शोर से मनाएगा।

मुख्य वक्ता प्रो-विवेक कुमार थे, जो एक विश्व-प्रसिद्ध समाजशास्त्री और एक सार्वजनिक बुद्धिजीवी हैं जिन्होंने सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ सोशल सिस्टम्स, स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज, जेएनयू के प्रोफेसर और चेयरपर्सन के रूप में काम किया है, और कोलंबिया विश्वविद्यालय, न्यूयॉर्क और हम्बोल्ट, बर्लिन में विजिटिंग प्रोफेसर रहे हैं। दर्शकों से खचाखच भरे हुए सभागार में अपने संबोधन में प्रोफेसर विवेक कुमार ने यह कहा कि निम्नलिखित दो प्रश्नों में तल्लीन होने के लायक थे: पहला डॉ बी आर अंबेडकर को एक शैक्षिक या विश्वविद्यालय प्रणाली में कैसे विश्लेषण किया जाना चाहिए और यह राजनेताओं या आम लोगों द्वारा किए गए विश्लेषण से अलग कैसे होना चाहिए? उन्होंने इस तथ्य पर ध्यान दिया कि लोकप्रिय और कार्यकर्ता अंबेडकर को 'अकादमिक' अंबेडकर की अवधारणा से अलग समझा जाना चाहिए। दूसरा, हम अंबेडकर को केवल एक दलित मसीहा या सिर्फ एक संविधान निर्माता या ड्राफ्ट्समैन ही क्यों कहते हैं जबकि वह उससे बहुत ऊपर थे? अंत में प्रो -कुमार ने उस विशिष्ट मुद्दे पर ध्यान आकर्षित किया: वह क्या परिप्रेक्ष्य है जिसके साथ उन्होंने अपने ज्ञान को सृजित किया? उन्होंने निम्न दृष्टिकोणों की ओर इशारा किया- ऐतिहासिक, पाठ्य आधारित, विकासवादी, तुलनात्मक और अंतर्राष्ट्रीय, डॉ अंबेडकर के ज्ञानार्जन के दार्शनिक फाउंडेशन के आधार के रूप में हैं। इसके अलावा, उन्होंने छात्रों को याद दिलाया कि डॉ अंबेडकर ने उन स्रोतों के समृद्ध भंडार से आकर्षित किया, जिनमें पुरातात्विक, अभिलेखीय, जनगणना डेटा, कमीशन रिपोर्ट, विभिन्न समाचार पत्रों से पेपर क्लिपिंग और अनुभवात्मक वास्तविकता भी शामिल हैं।

प्रो विवेक कुमार ने डॉ अंबेडकर की जयंती को चिह्नित करने के लिए इस तरह के एक महत्वपूर्ण समारोह का आयोजन करके डॉ अंबेडकर के योगदान और लेखन के बारे में आज के युवाओं को याद दिलाने के प्रयासों के लिए प्रो आसिफ को बधाई दी।

विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर दीक्षित ने अपने संबोधन में राष्ट्र निर्माण में डॉ बी आर अंबेडकर की भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया और वह भी बाबासाहेब के भाषणों से लेकर विधानसभा और भारत में लोकतंत्र के भविष्य के लिए उनके प्रस्तावों को निकटता से चित्रित करते हैं। प्रोफेसर दीक्षित ने जोर देकर कहा कि संविधान एक साधारण दस्तावेज नहीं था जो कि इसका कामकाज उन लोगों के इरादों पर निर्भर था जो इसे लागू करते हैं। उन्होंने दर्शकों को डॉ अंबेडकर द्वारा किए गए समृद्ध योगदान के बारे में याद दिलाया और वह भी विशेष रूप से जाति और वर्ग-आधारित भेदभाव के समाज से छुटकारा पाने तथा सभी के लिए सामाजिक न्याय और गरिमा को सुरक्षित करने के लिए।

प्रोफेसर दीक्षित ने छात्रों को याद दिलाया कि "लोकतंत्र एक लक्जरी नहीं था" और इस तथ्य का श्रेय कि भारत में एक निर्बाध लोकतंत्र है और संसदीय लोकतंत्र देश की स्थापना के बाद से पनपा है जिनका श्रेय डॉ बी आर अंबेडकर को जाता है। अमेरिका और अन्य देशों के तुलनात्मक विश्लेषण से अत्यधिक आकर्षित किया गया है, जिनके पास नस्ल, लैंगिकता और वर्ग के आधार पर भेदभाव का इतिहास रहा है, और उनके लिए "पृथक लेकिन समान उपचार" के गवाह हैं। प्रोफेसर दीक्षित ने कहा कि भारत ने असाधारण रूप से अधिकांश मामलों में अच्छा प्रदर्शन किया है। प्रोफेसर दीक्षित ने याद किया कि डॉ अंबेडकर ने आगाह किया था कि सबसे बुरे दिन हमारे लिए पर उस दिन आएंगे जब हम अपने स्वार्थी लक्ष्यों को राष्ट्र के ऊपर धकेल देंगे और यह नुकसान है कि हमें अनुस्मारक के खत्म होने से बचाने की जरूरत है क्योंकि क्संविधान "हम लोगों" के लिए है।

मुख्य अतिथि, असम के माननीय राज्यपाल श्री लक्ष्मण प्रसाद आचार्य, जो शिक्षा, राजनीति और सार्वजनिक सेवा में योगदान के लिए जाने जाते हैं, ने डॉ बी आर अंबेडकर द्वारा किए गए मूल्यवान योगदान को याद करने के लिए इस तरह के एक सार्थक और महत्वपूर्ण कार्यक्रम के आयोजन के लिए जामिया मिल्लिया इस्लामिया को बधाई दी। अपने भाषण में, उन्होंने दर्शकों को उन कठिनाइयों के बारे में याद दिलाया, जो बाबासाहेब के जीवन में थे और जिनका उन्होंने सामना किया, वह एक ऐसे स्थान पर पैदा हुए थे, जहां उन्होंने अपनी जाति के कारण भेदभाव का अनुभव किया था और इन बाधाओं के बावजूद वह कैसे दृढ़ रहे और कैसे मजबूत हुए। इसलिए, उन्होंने छात्रों को कहा कि निराशा के अपने क्षणों में उन्हें मानसिक शक्ति और साहस को आकर्षित करने के लिए बाबासाहेब की तस्वीर को देखना चाहिए। अंबेडकर के हवाले से कि यह वे हैं जो मरने के लिए बेखबर हैं, वास्तव में जानते हैं कि कैसे जीना है, माननीय राज्यपाल आचार्य जी ने कहा कि छात्रों को मजबूत इच्छाशक्ति होनी चाहिए और निर्धारित किया जाना चाहिए क्योंकि अंबेडकर के विचार हम सभी को ताकत प्रदान करेंगे।

माननीय राज्यपाल ने प्रोफेसर आसिफ के शब्दों को याद करते हुए कहा कि जामिया छात्रों को केवल मनुष्यों से इंसान में बदल देता है। उन्होंने कहा कि "एक शैक्षिक प्रणाली की भूमिका उच्च मूल्यों को स्थापित करने के लिए है ताकि हम जाति, पंथ, धर्म और भाषा के संकीर्ण मतभेदों से ऊपर उठ सकें और ऐसा कर सकें कि एक इंसान दूसरे इंसान के लिए अपने कर्तव्य को पूरा करें "। यह शिक्षा का सही उद्देश्य होना चाहिए अन्यथा कुछ हमारे शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया में है। उन्होंने कहा कि डॉ बी आर अंबेडकर के नाम को उन महान पुरुषों और महिलाओं के रैंक में सबसे महत्वपूर्ण रूप से गिना जाएगा, जिन्हें मानवता से मुक्ति के लिए याद किया जाएगा। उन्होंने कहा कि डॉ अंबेडकर ने गहन अंधकार में रोशनी फैलाई और मानवता के मार्ग को रोशन किया। श्री आचार्य जी ने कहा कि यह केवल इस बात पर आधारित था कि हम उन्हें न केवल संविधान शिल्पी और संविधान के पिता के रूप में याद करते हैं, बल्कि न केवल राजनीतिक और कानूनी बल्कि नैतिक दृष्टिकोण से उनके दर्शन और शिक्षाओं को भी समझते हैं। उन्होंने बल देते हुए यह कहा कि डॉ अंबेडकर ने दलितों, महिलाओं, दलित और उत्पीड़ित, और समाज के अन्य हाशिए पर रहने वाले वर्गों के उत्थान के लिए अपना जीवन समर्पित किया और भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू यह उदाहरण देती हैं कि बाबासाहेब के मूल्यों और दृष्टि को स्वतंत्र देश में महसूस किया गया है और उन्हें समझा गया है।

श्री आचार्य जी ने यह कहते हुए निष्कर्ष निकाला कि डॉ अंबेडकर का संदेश आज बहुत महत्वपूर्ण है और बहुत प्रासंगिकता रखता है, और यह जानने के लिए पर्याप्त नहीं था कि उन्होंने क्या कहा, लेकिन इसे जीने के लिए भी जानना चाहिए।

कार्यक्रम का समापन महामहिम राज्यपाल श्री आचार्य जी को संविधान की मूल प्रति कुलपति और कुल सचिव, जामिया मिल्लिया इस्लामिया द्वारा प्रदान करते हुए किया गया। उसके बाद संविधान की एक प्रति प्रोफेसर हरबंश दीक्षित जी को प्रदान किया गया। कुलपति द्वारा संविधान की एक प्रति प्रोफेसर विवेक कुमार जी को प्रदान किया गया तथा डॉ राजवीर द्वारा कुलपति महोदय को संविधान की एक प्रति प्रदान की गई और इसके बाद डॉक्टर कपिल और डॉक्टर अरुणेश द्वारा संविधान की एक प्रति माननीय कुलपति और कुल सचिव को प्रदान किया गया।

प्रोफेसर मोहम्मद महताब आलम रिज़वी ने धन्यवाद ज्ञापन में कहा कि जामिया मिलिया इस्लामिया सौभाग्यशाली है कि वह प्रोफेसर दीक्षित और प्रो विवेक कुमार के साथ माननीय राज्यपाल की उपस्थिति में इस तरह के महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। उन्होंने प्रख्यात वक्ताओं द्वारा बताए गए प्रमुख बिंदुओं का सारांश प्रस्तुत किया और कहा कि डॉ बी आर अंबेडकर अंबेडकर के योगदान को न केवल संविधान के निर्माण और सामाजिक न्याय एवं समानता के क्षेत्र के लिए याद किया जाएगा बल्कि अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में भी याद किया जाएगा कि किस प्रकार भारत की प्रमुख आर्थिक

संस्थानों और विकसित आर्थिक नीतियां डॉ अंबेडकर के विचारों से प्रभावित हैं। उन्होंने कहा कि अर्थव्यवस्था और नीति प्रतिमान सामाजिक न्याय और इक्विटी को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रो रिजवी ने कहा कि युवा राष्ट्र का भविष्य हैं और हमारे युवा अनुसंधानकर्ताओं को डॉ अंबेडकर के कार्यों और विचारों का अध्ययन करना चाहिए और इससे प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने समारोह कके आयोजन समिति के सभी सदस्यों के कार्य की सराहना की जिसमें डॉ कपिल देव, डॉ राजवीर सिंह, डॉअरुणेश कुमार सिंह, प्रो रविंस, डॉ अमित कुमार वर्मा, डॉ डोरी लाल शामिल हैं। साथ ही उन्होंने एनसीसी टीम, सुरक्षा टीम, स्वच्छता एवं बागवानी तथा विश्वविद्यालय के तकनीकी और प्रशासनिक कर्मचारियों को उनके श्रमसाध्य प्रयासों के लिए भी सराहना की । इस समारोह में जामिया मिल्लिया इस्लामिया के अधिकारियों, कर्मचारियों, संकायों के डीन, डीएसडब्ल्यू, कुलानुशासक, सुरक्षा सलाहकार, विभागों के अध्यक्ष ,केंद्रों के निदेशक, कुलपति के विशेष कार्याधिकारी, विदेशी छात्र सलाहकार, विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष, संकाय सदस्यों और छात्रों द्वारा भाग लिया गया था।

प्रो साईमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी,
जामिया मिल्लिया इस्लामिया